॥मेरा आपकी कृपा से॥

(तर्ज – मुझे इश्क है तुम्हीं से)

मेरा आपकी कृपा से, हर काम हो रहा है,
करते हो तुम कन्हैया, मेरा नाम हो रहा है ॥ टेर ॥
मेरी जिन्दगी में तू है, मेरे पास क्या कमी है,
मुझे और अब किसी की, दरकार भी नहीं है,
बस होता रहे हमेशा, जो कुछ भी हो रहा है॥
करता नहीं मैं फिर भी, हर काम हो रहा है,
कान्हां तेरी बदौलत, आराम हो रहा है,
मुझे ये भी पता नहीं है, ये क्या-क्या हो रहा है॥
पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है,
बनवारी बिना ही मांगे, हर चीज मिल रही है,
मर्जी है तेरी बाबा, अच्छा ही हो रहा है॥